प्रश्न १—शब्दशक्तियों का सामान्य परिचय दीजिए।

भारतीय काव्य-शास्त्र में शब्दशक्तियों के सम्बन्ध में पर्याप्त विचार हुआ है। व्याकरणशास्त्र, न्यायदर्शन मीमांसादर्शन तथा साहित्य आदि में शब्द तथा शब्द-शक्तियों के सम्बन्ध में अनेक निर्णय किये जा चुके हैं। शब्द की अभिधा, लक्षणा और व्यंजना नामक तीन शक्तियाँ (वृत्तियाँ) चिर प्रसिद्ध हैं। मीमांसकों ने तात्पर्या नामक वृत्ति को भी मान्यता प्रदान की है; व्यंजना वृत्ति की स्थापना अपेक्षाकृत नवीन है। ध्वनिवादी आनन्दवर्द्धन एवं अभिनवगुप्त ने इस शब्दशक्ति का प्रतिपादन किया और आचार्य मम्मट ने मनोयोग तथा अकाट्ययुक्तियों से व्यंजनावृत्ति की प्रतिष्ठा की है। व्यंजना साहित्यशास्त्र की प्राणदायिनी वृत्ति है।

शब्द एवं अर्थ के सम्बन्ध में विचार करने वाले तत्व को शब्दशक्ति कहते हैं। शब्द तथा वाक्य की सार्थकता उनके अर्थ में है। अर्थवान् शब्द ही शब्द कहलाते हैं। जिस शक्ति या व्यापार द्वारा अर्थबोध होता है उसे शब्दशक्ति कहते हैं—'शब्दार्थ-सम्बन्ध शक्ति'। यह शक्ति अर्थबोधक व्यापार का मूल कारण भी कहलाती है।

Scanned with CamScanner

"शब्द की शक्ति असीम है। शब्द, उच्चारण का ही हमारे मन, कल्पना और अनुभूति पर प्रभाव पड़ता है। अचार या चटनी का नाम लेते ही मुँह में पानी भर आता है। भूत या साँप शब्द का उच्चारण करते ही मन में भय का संचार होता है। यह प्रभाव अर्थगत है। अत: जिस शक्ति के द्वारा शब्द का यह अर्थगत प्रभाव पड़ता है, वही शब्दशक्ति कहलाती है। शब्द का अर्थबोध कराने वाली शक्ति ही शब्दशक्ति है। वह एक प्रकार का शब्द और अर्थ का समन्वय है। शब्द का व्यापार अर्थगत व्यापार है।[1]

हिन्दी के रीतिकाल आचार्य चिन्तामणि ने लिखा है कि, "जो सुन पड़े सो शब्द है, समुझि परै सो अर्थ" अर्थात् जो सुनाई पड़े वह शब्द है; तथा उसे सुनकर जो समझ में आवे वह उसका अर्थ है।

जितने प्रकार के शब्द होंगे, उतनी ही प्रकार की शक्तियाँ होंगी। शब्द वाचक, लक्षक और व्यंजक तीन प्रकार के होते हैं[2] तथा इन्हीं के अनुरूप तीन प्रकार के अर्थ —वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ होते हैं।[3] शब्द और अर्थ के अनुरूप ही शब्द की तीन शक्तियाँ—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना होती हैं।[4] मीमांसक आचार्य कुमारिल भट्ट तात्पर्या नामक एक चौथी शब्दशक्ति—तात्पर्या शक्ति भी मानते हैं।[5]

... की शब्दशक्ति का सोदाहरण विवेचन